## श्रम विभाग

## दिनांक 15 फरवरी, 1985

सं:श्रो.वि./फरीदाबाद/198-84/5850.—चूिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. णपना इन्टरप्राईसिज, 1-सी./69, एन.ग्राई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री ज्ञान शंकर प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौधोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निणंय के लिये निर्दिश्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री ज्ञान शंकर प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ग्रो.वि./एफ.डी./174-84/5857.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एकवा मैटल, प्लाट नं. 1 सी/71, एन.ग्राई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री दलबीर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है :

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, ग्रब ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम/88/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री दलबीर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

बी० पी० सहगल,

संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार ।

## दिनांक 15 फरवरी, 1985

सं.श्रो.वि./यमुना/69-84/5587.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. बी.एम.मैटल एण्ड स्टील श्रोडेक्टस, जगाधरी के श्रमिक श्री गोपीचन्द वर्मा तथा उसके श्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ; ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिप्ट करना वांछनीय समझते हैं :

इसलिये, अब, भीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44) 84-3 श्रम दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री गोपीचन्द वर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.स्रो.वि./श्रम्बाला/193-84/5592.—चंििक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. के.के. एण्ड कम्पनी, 212, इण्डस्ट्री-यल एरीया, पंचकुला (ग्रम्बाला) के श्रमिक श्री कन्हैया लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय साझते हैं ;

901

100

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)-84-3-श्रम दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अम्बाला को विवाद अस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिय निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद अस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री कन्हैया लाल की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.म्रो वि./फ़रीदाबाद/118-84/5864.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एस.जी. स्टील प्रा लि., प्लाट नं. 6, सैक्टर-4, बल्लबगढ़, के श्रमिक श्री फूल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामला में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब ग्रीबोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करत हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकार ग्रिधिसूचना सं. 5414-3-अम 88/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिध-नियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते है, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री फ़ूल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो.वि./एफ.डी./190-84/5899.—चूंकि हरिशाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. फ़िक इण्डिया लि., 13/3 मधुर रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सचेन्द्र बाबू तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद हैं;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सचेन्द्र बाबू की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./गुड़गांव/74-84/5906.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. मार्किटिंग कमेटी, हेली मण्डी, पटौदी, गुड़गांव के श्रमिक कृष्णा देवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित के मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है :

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—अम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495—जी. अम 57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादअस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विदाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या कृष्णा देवी की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

जे.पी. रतन, इप सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।